<?xml version="1.0" ?>			
<?xml-stylesheet type="text/css" href="home.css"?>			
<Doc id="mai-w-media-	MT00001(a)	"	lang="Maithili ">
<Header type="text">			
<encodingDesc>			
<projectDesc>	CIIL-Maithili Corpora, Monolingual Written Text		</projectDesc>
<samplingDesc>	Simple written text only has been transcribed. Diagrams, pictures, tables and verses have been omitted. Samples taken from page 5-15		</samplingDesc>
</encodingDesc>			
<sourceDesc> <biblStruct> <source>			
	<category>	Aesthetics	</category>
	<subcategory>	Literature-Biographies	</subcategory>
	<text>	Book	</text>
	<title>	tArAshaMkara baMdyOpAdhyAya	</title>
	<vol>		</vol>
	<issue>		</issue>
</source>			
<textDes>			
	<type>		</type>
	<headline>		</headline>
	<author>	mahAshvEtA dEvI	</author>
	<translator>	nibhA siMha	</translator>
	<words>	3,437	</words>
</textDes>			
<imprint>			
	<pubPlace>	India-New Delhi	</pubPlace>
	<publisher>	sAhitya akAdEmI	</publisher>
	<pubDate>	1996	</pubDate>
</imprint>			
<idno type="CIIL code">			</idno>
<index>		MT00001(a)	</index>
</biblStruct> </sourceDesc>			
<profileDesc> <creation>			
	<date>		</date>
	<inputter>	H.S.Rupa	</inputter>
	<proof>	Arun Kumar Singh	</proof>
</creation>			
<langUsage>		Maithili	</langUsage>
<wsdUsage>			

<writingSystem id="ISO/IEC 10646">Universal Multiple-Octet Coded Character Set (UCS). </writingSystem>		
</wsdUsage>		
<textClass>		
<channel mode="w">	print	</channel>
<domain type="public">		</domain>
</textClass> </profileDesc> </Header>		
<text><body>		
	ताराशंकर बंधोपाध्यायक जन्म 25 जुलाई 1898 ई.मे पश्चिम बंगालक बीरभूम जिलाक लाभपुर नामक गाममे भेल छल। हुनक पिताक नाम श्री हरिदास बंधोपाध्याय और माताक नाम श्रीमती प्रभावती देवी छल। ओ परिवारमे सभसँ पैघ छलाह। हुनका एकटा बहिन और दूटाभाय छलनि।	
	पौराणिक कथा सभमे लाभपुर अट्टहास नामसँ प्रसिद्ध अछि और ओहि 51 पवित्र स्थान सभमे सँ एक अछि जत' सतीक शरीरक छिन्न-भिन्न अंग खसल छलनि। लाभपुरमे शक्ति और विष्णु दुनू सम्प्रदाय सशक्त छलैक।	
	बंगालक आन जिला सभ जकाँ बीरभूम सेहो लोक संगीतक धनी अछि। बाल्यावस्थामे ताराशंकरक नींद ओहि बाउल वैष्णव एवं शाक्त गायक सभहक गीत सुनि क' खुजैत छल जे प्रातः काल दान-दक्षिणा लेबाक लेल द्वार पर अबैत छलाह आ जनिका सभकेँ ग्रामीण कहियो मना नहि करैत छलनि। मुसलमान भक्त सेहो अबैत छलाह और मुसलमान पीर सभहक एवं हिन्दू-देवता सभहक भक्तिक भजन गबैत छलाह। बीरभूमक लोक सभमे सदिखन साम्प्रदायिक सद्भाव रहल अछि। इस्लामक अनुयायी पटुआ नामक एक विचित्र वनजारा जातिक लोक अबैत छल और भगवान श्रीकृष्ण तथा गोरांग महाप्रभुक जीवन-चरितक चित्रावली ग्रामक लोकसभकेँ देखबैत छल एवं भजन गबैत छल। व्यावसायिक सपेरा सभ सेहो मुसलमान छल। पुरुष अपन सौन्दर्यक लेल प्रसिद्ध छल और महिला लोकनि उदार प्रेम और कुशल नृत्यक लेल। बाजीगर अबैत छल और नवयुवक सभहक मनकेँ मोहि लैत छल। एहि अद्भुत बनजारा जातिक स्त्रिगण सभ प्रणयवर्द्धक तथा जादुई दबाइ सभ सीधा-सादा ग्रामीण सभक हाथ बेचैत छली। पुरुष खरहा, सनगोहि आ साहीक शिकार करैत छल।	
	गामक छोट-पैघ जमींदार उच्च वर्गक छलाह। हुनका लोकनिमे सँ किछु कोइलाक खान सभ किनबाक बाद समृद्ध भ' गेल छलाह। गरीब सभहक जीवन घोर दरिद्रतामे बीतैत छल, मुदा उच्च वर्गक लोक सभहक लेल जीवनयापन सस्त छल। ताराशंकर लिखैत छथि "चारि-पाँच हजार रुपैया साल (हुनक छोट सन जमींदारीक आमदनी) पर केओ राजा जकाँ रहि सकैत छल। साग-सब्जी पर मासमे पचहत्तर पाइ खर्च होइत छल। एहिपर प्रत्येक पन्द्रह दिनमे बेर हाटक दिन मात्र सैंतीस पाइ खर्च होइत छल। एक नौकरकेँ मासमे डेढ़ रुपैया देल जाइत छल और कुशल खानसामाकेँ अढ़ाइ रुपैया देल जाइत छल। पुरुषभनसीया केँ अढ़ाइ रुपैया तथा महिला बनसीया केँ तीन या साढ़े तीन रुपैयासँ बेसी नहि भेटैत छलैक।"	
	खानदानी रईस सभ और कोइलाक नव धनिक व्यापारी सभहक बीच तरे-तर प्रतिद्वन्दिता चलैत रहैत छल। व्यापारी वैष्णव छलाह आ जमींदार शाक्त। के मन्दिरक मरम्मत कराओत वा के पोखरिक घाट सभहक मरम्मत कराओत के प्राथमिक विद्यालय खोलत वा के हाई स्कूलकेँ वित्तीय सहायता देत, एहि विषय सभपर भारी प्रतिद्वन्दिता चलैत रहैत	

	छलैक। मांगलिक अवसरपर दुनू दल फटक्का फोड़ि क' वा नाटक क' क' एक-दोसराकेँ हरैबाक प्रयास करैत छल। लाभपुरमे नाटकक नीक परम्परा छल। गाम मे स्थायी रंगमंच छलैक, जाहिमे बिजली लागल छलैक एवं एकटा प्रेक्षागृह सेहो छलैक। प्रसिद्ध यात्रा-मंडली सभहक लोक गाममे नाटक करबाक लेल अबैत छलाह।	
	एहन छल समाज आ एहन छलाह लोक। बीरभूमक लाल और सुखायल माटि, आ दुर्दान्त कोपाई नदी ताराशंकरक जीवनमे कम महत्त्वपूर्ण स्थान नहि रखैत अछि। हिन्दू धर्मक विकसित रूप आ तकर प्रहारक अछैत, प्राचीन पूजा-पद्धतिक अवशेष साधल चुड़ैल जकाँ यातना सँ चिचिआईत धूराक विहाड़ि, वर्षा सँ मुक्ति पबैत धरतीक झुलसल प्राण आ बाढ़िसँ आप्लावित नदी-ताराशंकरक अधिकांश कथा आ उपन्यासक आधार भूमि इएह सभ अछि। "चैताली घुरनी" (बैशाखी बिरड़ो) सँ ल' क' मृत्योपरांत प्रकाशित "शताब्दीर मृत्यु" (शताब्दीक मृत्यु) धरि ओ एहि धरती, एहि माटि, एही प्रकृति और एही जनमानसक अन्वेषण तथा पुनरान्वेषण करैत रहलाह।	
	हुनक पिता स्कूलक शिक्षा पूरा नहि कैने छलाह। ओ अपना सँ पढ़लनि आ बहुपठित भेलाह। हुनका लग नीक पुस्तकालय छल और ओ विभिन्न पत्र-पत्रिका एवं दैनिक पत्र सभहक ग्राहक छलाह।	
	जखन ताराशंकर मात्र आठ वर्षक छलाह हुनक पिताक मृत्यु भ' गेल छल। हुनक माता पटनाक एक शिक्षित परिवारक छलीह। पुरान खानदानी अंग्रेजी शिक्षाकेँ प्रोत्साहन नहि दैत छल, मुदा हुनक मातृकुल अंग्रेजी शिक्षामे बड़ आगाँ छल। हुनक माता हुनका बड़ प्रभावित कैने छलीह। अव्यवस्थित एवं अस्त-व्यस्त घरकेँ ओ योग्यतापूर्वक ठीक कैलनि और योग्यतासँ चलैलनि। ताराशंकरक पिताक बहिन (पीसी) अपन पति एवं पुत्रक संगहि एकहि दिन मुइलाक पश्चात् अपन भायक संग रह' लगलीह। ओ ताराशंकरकेँ बड़ बेसी स्नेह करैत छलीह। सही वा गलतक नीक समझ और मूल्यक उच्च मानदंडकेँ रखनिहारि ई दुनू महिला ताराशंकरक जीवनक प्रारम्भिक अवस्थामे महत्त्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह कैलनि।	
	हुनक माता अपना संग अनेक नव आ सुखद परिवर्तन अनलनि। ओ खिस्सा कहबामे कुशल छलीह। हुनक केकटा रचनामे हमरा सभकेँ एक उत्कृष्ट खिस्सा सुनवै वाला भेटैछ जेना "गणदेवता" और "पंचग्राम" (लोक ईश्वर आ पाँच गाम) में न्यायरत्न। हुनक माता देशभक्त परिवारसँ आयल छलीह। हुनकभाय लोकनि अपना समयक राष्ट्रीय आन्दोलन सभमे भाग लेने छलाह। 1905 ई.मे लॉर्ड कर्जन द्वारा बंगाल-विभाजनक दुर्भाग्यपूर्ण दिन ताराशंकरक पित्ती अपन बहिनक हाथमे राखी बन्हलनि एवं ओ बदलामे अपन बेटाक हाथमे दोसर राखी बन्हने छलीह, जे एकदम बेदरे छल।	
	अपन पिताक मृत्यु, अपन माताक साहस एवं धैर्य, अपन पीसीक अधिकारपूर्ण स्नेह–एहि सभहक कथा निष्ठापूर्वक "धातृदेवता" मे चित्रित भेल अछि।	
	जमींदार सभहक वर्ग खर्चीला, शराबक शौकीन एवं अत्यधिक घमंडी छल। हुनका लोकनिक वैयक्तिक और सामाजिक व्यवहारक स्तर बड़ ऊँच छल। ताराशंकरक मनमे अन्त धरि जमींदार सभहक लेल अत्यधिक अनुराग छलनि यद्यपि ओ अपन लेखनमे ओहि व्यवस्थाक दुर्गुण सभहक पर्दाफाश कैलनि अछि। ई जमींदार लोकनि धार्मिक अनुष्ठान सभक पालन बड़ निष्ठासँ करैत छलाह। ताराशंकरक परिवार धर्मपरायण तथा परमात्मामे विश्वास करऽ	

	वला छल। नीक और बेजाय सही और अधलाह सब स्पष्ट रूपेँ विभाजित छल। नीक, नीक छल और बेजाय, बेजाय छल, सही सही छल और अधलाह अधलाह छल। अधलाह काज मात्र एही लेलसही नहि भ' जाइत छल जे प्रभावशाली और धार्मिक ओकरा करैत छलाह। एहने विचार सभक मध्य ताराशंकर वयस्क भेलाह। युवावस्था धरि हिनक धारणा सभ स्थापित जीवन मूल्य रूप बनि गेल छल। एहि प्रकारेँ जन-साधारण, प्रकृति, समाज आ परिवारक संगहि धार्मिकता एवं परमात्मामे विश्वास हुनक विचार सभक गठन कैलक आ हुनक चिन्तनक ढंगक निर्माण कैलक।	
	जीवनक अत्यन्त संवेदनाशील समयमे जखन ओ किशोरावस्थासँ युवावस्था दिस बढ़ि रहल छलाह, तखन ताराशंकरक भेंट विख्यात नौजवान क्रान्तिकारी नलिनी बागचीसँ भेल। नलिनी बागची हुनका मे राजनैतिक जोश भरलनि। ई सभ जनैछ जे प्रथम विश्व-युद्धक समय हमरा सभक क्रन्तिकारी सभ दूटा कार्यपर विशेष ध्यान देलनि। पहिल, सेनाकेँ विद्रोहक लेल भड़ कैलनि और दोसर जर्मनीसँ हथियार मँगौलनि आ जतीन्द्रनाथ मुखर्जी जे 'बाधा जतीन'क नामसँ प्रख्यात छलाह-सन नेता लोकनिक नेतृत्वमे युद्ध कैलनि। ई दुनू योजना असफल रहल। आतंकवादी या त' लड़ैत मारल गेल या दीर्घकालीन सजाय कटबा लेल जेल चलि गेल। किछु गोटेँकेँ मृत्यु-दण्ड सेहो भेटलनि।	
	ताराशंकर 1916 ई.मे लाभपुरक यादवलाल इंगलिश हाई स्कूलसँ मैट्रिक परीक्षा पास कैलनि। ओहि साल हुनक विवाह भ' गेल। हुनका कलकत्ताक' सेंट जेवियर्स कॉलेजमे भरती कैल गेलनि मुदा हुनका कॉलेज छोड़ए पड़लनि, कियेक तँ हुनक नाम संदिग्ध राजनैतिक व्यक्ति सभक सूचीमे छल। बादमे ओ 'साउथ सुबर्बन' कॉलेज मेनाम लिखौलनि, जे आब 'आशुतोष कॉलेज'क नामसँ जानल जाइत अछि। एहि बेर अस्वस्थाक कारणेँ हुनका अपन पढ़ाइ बन्द करे पड़लनि।	
	क्रांतिकारी क्रिया-कलापमे एक प्रकारक अस्थायी शिथिलताक पश्चात् 1921 ई. क क्रान्ति नव लहरि ल' कए आयल। महात्मा गाँधीक अहिंसात्मक असहयोगक विचार ताराशंकरक भावुक कल्पनाकेँ उत्तेजित कैलक। हुनक आत्म-कथात्मक रचना सभसँ हमरा लोकनिकेँ ज्ञात होइछ जे हुनका मनमे अपन देशक सेवा करबाक प्रबल इच्छा छल। हुनका ने कोनो दलसँ जुड़बाक इच्छा छल आने आतंकवादी काज सभमे हुनका कोनो विशेष रुचि छलनि। आतंकवादी सभक संग हुनक सक्रिय सम्बन्ध अत्यन्त कम छल। हुनक अर्ध-कथात्मक उपन्यास "धातृदेवता" मे हुनक राजनैतिक विचार उजागर भेल अछि।	
	ताराशंकर वास्तवमे भारतीय आतंकवादी सभक क्रान्तिकारी विचारक प्रति कखनो समर्पित नहि रहलाह। 'कल्लोल-दल'क लेखक गणक विषयमे लिखैत काल बादमे ओ लिखलनि, "हम विद्रोही नहि छलहुँ।" राजनीतिमे हुनक रुचि मुख्यतः भावनात्मक छलनि जे बादमे साहित्यिक रुचिमे परिवर्तित भ' गेलनि। गाँधीजीक आदर्शमे हुनका ओहि सब प्रश्नक उत्तर भेटलनि जे हृदयकेँ मथैत रहैत छलैक। राजनैतिक स्वतन्त्रता व्यक्तिकेँ स्वतन्त्र नहि क' सकैछ। कोनो व्यक्ति ताबत धरि स्वतन्त्र नहि भ' सकैछ जाबत धरि ओ अन्धविश्वास, लोभ, अज्ञानता आ संकीर्ण विचार सभक दास रहत। राजनैतिक स्वतन्त्रता भारतक करोड़ो नागरिककेँ कखनो स्वतन्त्र नहि क' सकैत छल। ओकरा गरीबी, शोषण, बीमारी, अशिक्षा एवं भाग्यवादसँ मुक्त करबाक छलैक। अपन देशवासीक लेल एहने चिन्ता हुनका हृदयमे अन्त धरि छल।	

	अपन जीवन कालमे हुनका एक महान लेखक मानल गेल। यदि ओ महान लेखक छथि तँ हुनक रचना सबमे महनताक इएह सभ गुण अछि जेना लोकक लेल चिन्ता, ममत्व स्नेह आ सहानुभूति। एहन व्यक्ति सभहक विषय मे बेर-बेर लिखि क' ओ ओकर पीड़ाकेँ कम क' देबाक भावनात्मक संकल्प करैत प्रतीत होइत छथि। हुनक प्रतिबद्धता राजनीतिक नहि, व्यक्ति सभक प्रति छल। हुनक व्यक्तिक अवधारणा ओकर सम्पूर्णतामे निहित अछि। हुनक प्रमुख उपन्यास सभक नायकक चरित्र चित्रण आदर्श मूलक अछि, जेना "गणदेवता" आ "पंचग्राम"क देबू, "धातृदेवता"क शिवनाथ और "सन्दीपन पाठशाला"क सीतानाथ (गामक प्राथमिक स्कूल जकर नामकरण ओहि संतक नाम पर कैल गेल जे भगवान् श्रीकृष्णकेँ शिक्षित कैलनि)।	
	एक पूर्ण व्यक्ति अपन वैयक्तिक, घरेलू, सामाजिक और राजनैतिक दायित्वसँ अपन मुँह नहि मोड़ैत अछि। ओ अपना समक्ष उच्चादर्श रखैत अछि आ ताही अनुसारेँ चलबाक पूर्ण प्रयास करैत अछि। ओ सदा आनक हितक लेल अपन हितक त्याग करैत अछि। पूर्ण व्यक्तिक सम्मान तँ सब करैत अछि किन्तु बुझैत केओ केओ अछि। तेँ ओ मूलतः एकाकी भ' जाइछ।	
	ताराशंकर कवि होमए चाहैत छलाह। १९२६ ई मे हुनक एक युवा सम्बन्धी "त्रिपत्र" शीर्षकसँ हुनक कविता सभक संग्रह छपने छल। हुनक एकटा पूर्व-लिखित कविता जलधर सेन द्वारा सम्पादित एक प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका "भारतवर्ष"मे प्रकाशित भ' चुकल छल। व्यक्तिगत रूपेँ मुद्रित और वितरित "त्रिपत्र" शीघ्रहि विस्मृत भ' गेल। ताराशंकर बाद मे कविता कम लिखलनि, मुदा हुनक भीतरक भावुक कवि जीवित रहल। अनेक ग्रामीण कवि जकाँ हुनकहुँमे 'कवियाल' अर्थात् आशुकवि जकाँ तत्काल काव्य-सृजन और गायनक सहज प्रतिभा छल। 'कवियाल' गीत लिखैत अछि और ओकरा गबितो अछि। गीतकारक रूपमे ताराशंकरक प्रतिभाक सभ सँ नीक उदाहरण "कवि" अछि। "कवि" एक ग्रामीण कवि गायकक कथा थिक।	
	लाभपुरमे नाटकक पुरान परम्परा छल। गामक एक सम्पन्न व्यक्ति निर्मल शिव बनर्जी नाटककारक रूपमे प्रसिद्ध भ' चुकल छलाह। कलकत्तामे हुनक नाटक व्यावसायिक मंडली सभ द्वारा खेलल जाइत छल। ताराशंकर सेहो नाटक लिखबाक निश्चय कैलनि। ओ ग्राण्ट डफक "मराठाक इतिहास" पुस्तकक तीन खण्ड किनबाक लेल 18 रुपैया खर्च कैलनि, जे ओहि समयक लेल पैघ राशि छल, और पानीपतक तेसर लड़ाइपर नाटक लिखलनि। निर्मल शिव बनर्जीक प्रोत्साहनपर ई नाटक एक नाट्यशालाक मैनेजर केँ देल गेल, मुदा ओ एक अज्ञात नाटककारक रचना पढ़बासँ अस्वीकार करैत ओकरा आपस क' देलनि। घर घुरलाक बाद ताराशंकर अपन पाण्डुलिपि जरा देलनि।	
	हुनका आघात पहुँचल छल। एतेक बेसी आधात जे ओ आगाँ किछु नहि लिखबाक प्रतिज्ञा क' लेलनि। ओ काँग्रेसक लेल काज क' रहल छलाह तथा समाज-सेवक-समितिमे व्यस्त छलाह। ओ एक छोट जमींदार छलाह, जिनक खेतीक आमदनीसँ परिवारक सीमित आवश्यकता पूर्ण भ' जाइत छल।	
	शीघ्रहिं ओ अपन प्रतिज्ञा बिसरि गेलाह एवं एक नवयुवकक संग "पूर्णिमा" नामक मासिक पत्रक सम्पादन करय लगलह। ओ कविता, कथा, समीक्षा और सम्पादकीय लिखैत छलाह। लिखबाक हुनक अदम्य आकांक्षाकेँ एकटा पथ भेटि गेल मुदा ई व्यवसायिक लेखन नहि	

	छल, एहिसँ हुनक चेतनाक रिक्तता नहि हटल। तखनहि संयोगसँ ओ "कालीकलम" (स्याही और कलम) नामक पत्रिकाक सम्पर्कमे अयलाह, जाहिमे प्रेमेन्द्र मित्र और शैलजानन्द मुखर्जीक दूटा कथा पढ़लनि। ओ अभिभूत भ' गेलाह। ओ निरन्तर कलकत्ता जाइत छलाह। किन्तु आश्चर्यक बात ई छल जे नव साहित्यिक प्रवृत्ति एवं गतिविधिक हुनका बड्ड अल्प ज्ञान छलनि। ओ अनुभव कैलनि जे साहित्यिक विचार सभमे ओ अद्यावधि परिचित लेखक लोकनिक अपेक्षा एहि दुनू लेखकक बेसी निकट छथि। बादमे एहि कथापर अपन प्रथम प्रतिक्रियाकेँ स्मरण करैत ओ कहने छथि जे यद्यपि ओ अभिभूत भेल छलाह तथापि हुनका ई दुनू कथा स्थूल और दैहिक आवेगसँ पूर्ण लागल छलनि।	
	एक बेर जखन ओ अपन जमींदारीक एक स्थानपर गेल छलाह तखन ओहि ठाम हुनका एकटा सुन्दर वैष्णव युवतीसँ भेँट भेलनि। ओ ओकरा पर "रसकली" (पवित्र प्रतीक ललाट, नाक और कंठ पर चन्दन अथवा माटीक लेपसँ कैल तिलक) नामसँ एकटा कथा लिखि क' ओहि समयक एकटा प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिकामे पठौलनि। आठ मासक पश्चात् जखन ओ ओहि कथाक विषयमे जनबाक लेल कलकत्ता गेलाह तँ ज्ञात भेलनि जे ओकरा क्यो पढ़बे नहि कैलक। ओ कनमुँह भ' मध्य कलकत्तासँ दक्षिण कलकत्ता धरि पैरे घुमैत रहलाह। एक बेर पुनः ओ कहियो नहि लिखबाक और समाज—सेवामे जीवन लगेबाक संकल्प कैलनि।	
	लाभपुर घूरि क' ओ 'ग्राम संघ मण्डल'क अध्यक्ष बनि गेलाह। साधारण लोक सभक बीच रहैत ओ साइकिलसँ सम्पूर्ण जिलाक भ्रमण कैलनि। एहिसँ हुनका ग्रामीण जीवनक नव अन्तर्दृष्टि भेटलनि। वीरभूम जिलामे पानिक अभाव सब दिन रहल अछि। लगातार दू वर्षक हैजाक प्रकोपसँ बीरभूम-गामक अनेक लोक काल-कवलित भ' गेल छल। छः मास धरि ताराशंकर लोक सभक सेवा-सुश्रूषा कैलनि आ एहि महामारीसँ संघर्ष करबामे लोक सभक मदति कैलनि। गामक एहि व्यापक भ्रमणसँ ओ विभिन्न प्रकारक लोक सभक सम्पर्कमे ऐलाह, जकरा सभक ओ, अपन उपन्यास और कथामे जीवन्त चित्रण कैलनि अछि। ओ लिखने छथि जे एहि तरहेँ ओ "हाँसुली बांकेर उपकथा"क सुचाँद और नासूवाला, "कवि"क निताई आ आन कतेक लोक सभकेँ जनलनि।	
	समय बीतैत रहल। ओहि समयमे हठात् बहुचर्चित पत्रिका "कल्लोल"क मुखपृष्ठपर हुनकर दृष्टि पड़लनि, जे ओहि समयमे अत्याधुनिक रचनाकार सभक मुखपत्र छलैक, ओ अपन प्रतिज्ञा बिसरि अस्वीकृत कथा "रसकली", "कल्लोल" केँ पठा देलनि।	
	चारि दिनक भीतरे हुनका लग स्वीकृति-पत्र आबि गेल। कथा यथासमय छपल और ओकर खूब प्रशंसा भेल। सम्पादक दोसर कथाक माँग कैलक। ओहो छपि गेल। एक आन अत्याधुनिक पत्रिका "काली कलम" लिखलक जे ई कथा सब अद्भुत अछि। ई सब कथा १९२९ ई. मे. प्रकाशित भेल छल।	
	"कालीकलम", "कल्लोल", "उपासना" और "धूपछाया" हुनकासँ रचना मँगलक। ओ सहर्ष रचना पठौलनि। एहि अवधिक लिखल कथा सभमे "श्मशानेर पथे" सेहो छलैक, जे कि जमींदार सभक, स्थानीय तथा पठान सूदखोर सभक शोषण, मलेरिया आ प्रशासनक 'बर्बर नष्ठुरताक' कारणेँ एक गामक शनैः-शनैः किन्तु अपरिहार्य मृत्यु-प्रक्रियाक कथा थीक। ई कथा हुनक "चैताली घुरनी" क आधार-भूमि बनल।	
	विभिन्न काजें ओ समय-समयपर कलकत्ता अबैत रहैत छलाह। एहि बेर ओ "कल्लोल" और	

	“कालीकलम”क कार्यालय गेलाह। हुनक साहित्यिक आत्मकथा “आमार साहित्य जीवन” (हमर साहित्यिक जीवन) सँ ज्ञात होइछ जे यद्यपि “कल्लोल” पत्रिका सर्वप्रथम हुनक प्रतिभाकेँ परखने/छल मुदा ‘कल्लोल-दल’क लेखकगणसँ हुनक प्रथम भिड़न्त असुविधाजनक छल। ओ हुनका सभक मध्य अपनाकेँ आत्म सचेतन एवं पृथक अनुभव कैलनि। शैलजानन्दकेँ ओ पहिनहिसँ जनैत छलाह। आन नवयुवक लेखकक वर्ग स्वप्नद्रष्टा, निष्कपट प्रेम एवं अपन नामक प्रभा—मण्डलपर मुग्ध छल। शहरक जीवनसँ ताराशंकर कम परिचित छलाह।ओ ई नहि बुझि सकलाह जे हुनका सभक शान्त उदासीनता और आत्म विश्वास एकटा निर्दोष देखाबा मात्र थीक। ताराशंकर हुनका सब जकाँ यौवनक प्रथम चरणमे नहि छलाह। ताराशंकर गामसँ आयल छलाह। ओ सभ नगरक निवासी छलाह। ओ ओहि समय विवाहित छलाह और हुनका संतानो छलनि। ओ सब जीवनक कुरूपताक संधान क’ रहल छलाह, कल्पनासँ ठोस अनुभवक दुनियामे प्रवेश क’ रहल छलाह। हुनका जीवनक कुरूपताक कल्पना नहि करय पड़ैत छलनि, कियेक तँ ओ जीवनक यथार्थ देखने छलाह। हुनका अनुभव भेलनि जे ओ शहरी साहित्यकारसँ पृथक छथि। प्रथमहि भेंटमे हुनकर उत्साह मंद पड़ि गेलनि। भावुक आ अतिसंवेदनशील ताराशंकर मात्र सहज सरल स्नेहक वातावरणमे स्वतन्त्रताक अनुभव क’ सकैत छलाह। ओ शीघ्रहि “कालीकलम”क सम्पादक मुरलीधर वसुक निकट आबि गेलाह। एहि बीच हुनक सम्पर्क नृपेन्द्रकृष्ण चटर्जी, दिनेश दास, पवित्र गांगुली, अचिंत्यकुमार सेनगुप्त, प्रेमेन्द्र मित्र, सरोजकुमार रायचौधरी सावित्री-प्रसन्न चटर्जी आदि एहि समयक लेखकगणसँ भेलनि। सवित्री प्रसन्न “उपासना”क सम्पादक छलाह, जे बादमे “चैताली घुरनी”क प्रकाशनमे हुनक सहायता कैलनि। उक्त लेखक सबमे सँ अनेको आगाँ चलि क’ हुनक आजीवन—मित्र बनि गेलाह।	
	१९२९ ई. क पश्चात् भारतमे कष्टकर अशान्तिक काल आयल। एहि उथल-पुथलक इतिहासमे ‘मेरठ षड्यन्त्र’ और चटगाँव शस्त्र डकैतीक विशेष उल्लेख आवश्यक अछि। महात्मा गाँधी एहि अशान्तिकेँ ‘सिविल नाफरमानी’ आन्दोलनक दिस मोड़ि देलनि। ६ अप्रैल १९३० ई. केँ ओ अपन ७८ अनुयायीक संग विख्यात दांडी पद-यात्रा कैलनि। भारतक उत्तर-पश्चिमी सीमान्त प्रदेशसँ बम्बई धरि चहुँ दिस लाखक-लाख लोक गाँधीक आह्वानपर आन्दोलनमे कूदि पड़ल। मईमे गाँधीजी गिरफ्तार भ’ गेलाह। जून मे भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस केँ अवैध संगठन घोषित क’ देल गेल। दस मासमे 90 हजारसँ बेसी लोक गिरफ्तार भेलाह।	
	१९३१ ई. मे पश्चिम बंगालक मिदनापुरक हिजली जेलमे पुलिसक गोलीसँ दू टा राजनैतिक बन्दी मारल गेलाह। कलकत्तामे एकर विरोधमे विशाल आमसभा भेल जाहिमे टैगोर जनताकेँ सम्बोधित कैलनि।	
	ताराशंकर १९३० ई. मे जेल गेलाह। ओ जेलमे जे किछु देखलनि ताहिसँ स्पष्ट भ’ गेल जे राजनीति तेजीसँ सत्ता हथियैबाक खेल बनि रहल अछि। किछु बन्दी सभक राजनैतिक उन्मादसँ ओ स्तब्ध छलाह। जेलमे ओ दूटा नव उपन्यास “चैताली घुरनी” और “पाषाण पुरी” लिखव आरम्भ कैलनि। दिसम्बर १९३० ई. मे ओ जेलसँ छुटलाह।	
	जेलसँ छुटबाक तुरंत बाद ओ पहिल बेर सुभाषचन्द्र बोससँ भेँट कयलनि। सुभाषचन्द्र आ जे.एम. सेनगुप्तक बीच किछु मतान्तर भ’ गेल छल। एहि विषयक छानबीन करबाक लेल श्री अणे कलकत्ता आयल छलाह। ताराशंकरकेँ गवाहक रूपमे वीरभूमसँ बजाओल गेल। जखन ओ सुभाषचन्द्रसँ भेँट कैलनि त’ हुनकासँ कहलनि जे हुनका सन सामान्य कार्यकर्त्ता	

	काँग्रेसक सेवाक लेल आयल छल व्यक्ति सभक लेल नहि। एहि दू टूक जबाबसँ सुभाषचन्द्र बड़ प्रभावित भेलाह। ताराशंकर सुभाषचन्द्र बोसक व्यक्तित्वसँ एतेक प्रभावित भेलाह जे बादमे ओ अपन पहिल उपन्यास "चैताली घुरनी" हुनके समर्पित कैलनि। घर आबि ओ अपन परिवारक महिला सभक जेवर बेचि क' बोलपुरमे एक छोट सन प्रेस कीनि लेलनि। एक छोट सन कोठरीमे छापाक मशीन लगायल गेल। "उपासना" और "अभ्युदय"क सम्पादक सरोजकुमार राय चौधुरी जखन जेलसँ छुटि क' अयलाह तखन ई एहिपत्र सभक लेल लिखऽ लगलाह।	
	बंगालक लोकनृत्यक पुनरूद्धारमे लागल एक जिला-प्रशासक अपन पदक दुरूपयोग क' गाम सबसँ जबरदस्ती पुराकृति सभ एकत्र करब आरम्भ क' देलक आ एहिसँ ओ ग्रामीणक मध्य अप्रिय भ' गेल। लोकनृत्यक प्रति ओकर उत्साहपर सन्देह कैल जाय लागल जे ओ वास्तव मे बंगालक नवयुवक सबकेँ राष्ट्रीय आन्दोलनक पथसँ विमुख करै चाहैछ। एहि तरहक शंकाकेँ पूर्णतः मिथ्या नहि कहल जा सकैछ। ओकर गाम सबक मूर्तिक संग्रहपर व्यापक क्षोभ पसरि गेल। एक क्रुद्ध राजनैतिक कार्यकर्त्ता ताराशंकरक अनुपस्थितिमे हुनक प्रेससँ एकटा लोकप्रिय गीतक पैरोडी छापि देलक। प्रशासककेँ लक्ष्य क' लिखल ओ गीत स्वांग आ उपहास सँ भरल छल। प्रशासक तमसा गेल। संबद्ध व्यक्ति गिरफ्तार क' लेल गेल। ताराशंकर कोपभाजन बनलाह। जँ हुनका कोनो आरोपमे गिरफ्तार नहि कैल जा सकैत छल तँ दोसर झूठ आरोपमे फँसैबाक प्रयास होमए लागल। बोलपुर स्टेशनपर ताराशंकरकेँ दोसर बेर सुभाषचन्द्र बोससँ भेँट भेलनि। ओ ताराशंकरकेँ सलाह देलनि जे ने त' ओ लिखित अनुबन्ध देथि, ने समर्पणे करथि। ताराशंकर छापा मशीनक कल-पुर्जा खोलि बैलगाड़ीपर लादि लाभपुर घुरि गेलाह।	
	जीवनक एहि चरणमे काँग्रेससँ हुनक सम्बन्ध कमे छल। गामक जीवन उबाऊ छल। गामक लोक बेर-बेर विफल होयवाला व्यक्तिकेँ नहि बूझि सकल। बेचैनीमे ओ एकबेर पुनः जिला सभक भ्रमण करब आरम्भ कैलनि। ओ एकटा छोट बालिकाक मृत्यु पर कथाक पहिल भाग लिखलनि, मुदा ओहि कथाकेँ पूर्ण करै सँ पहिनहि हुनक ६ सालक बेटी बुलूक मृत्यु भ' गेल।	
	शोक-संतप्त भय ओ कलकत्ता चलगेलाह। "उपासना"क सम्पादक सावित्रीप्रसन्न चटर्जी अपन पत्रिका बन्द करैवला छलाह। ओ ताराशंकर केँ "उपासना" मे प्रकाशित हुनक एकटा उपन्यास एवं एकटा कथाक बकाया पारिश्रमिक देलनि। सजनीकांत दास अपन पत्रिका "बंगश्री"क लेल "उपासना"क कार्यालय ल' रहल छलाह। तत्कालीन लेखक सभक सभामे ताराशंकर अपनाकेँ पृथक आ एकाकी अनुभव करैत अपन व्यक्तिगत सन्ताप मे छटपटा रहल छलाह। ओ लाभपुर घुरि गेलाह।	
	किछु दिनक पश्चात् ओ ग्राम—विकासक कोनो काजक सन्दर्भमे टैगोरसँ भेँट करबाक लेल शान्तिनिकेतन गेलाह।	
	ओ जनैत छलाह जे हुनका पाई नहि चाही। मुदा ओ की चाहैत छलाह? हुनक पत्नीक सम्बन्धी सब हुनका कोइलाक व्यापारमे लगबय चाहैत छलाह, मुदा विफल रहलाह।	
	आब लाभपुर ताराशंकरक गामक रूपमे बेसी प्रसिद्ध अछि। मुदा हुनक अपन जीवन-कालमे गामक लोक एहि विचित्र व्यक्ति केँ देखय नहि चाहैत छल। हुनक व्यवहार आसाधारण छल। ई आदमी हुनका सबकेँ बूझबामे नहि अबैत छल जे कखनो जेल चलि जाइत छल,	

	कखनो गाम सभक भ्रमण करए लगैत छल, कखनो धनार्जनसँ दूर भ' जाइत छल आ कथा आ उपन्यास लिखैत रहैत छल। जँ गामक समाज संकुचित होइछ, तँ लोक ओहि व्यक्ति पर अविश्वास करै लगैत अछि जे भिन्न स्वभावक होइछ। यदि ओ व्यक्ति ओकरा सभक चीन्हल-जानल रहैछ तँ ओ सब दुश्मनी ठानि लैत अछि। एकटा तुच्छ विषयपर ताराशंकरकेँ दुश्मनी मोल लेबय पड़लनि। ताराशंकर गाम-समाजक आलोचनाक विरुद्ध ओहि व्यक्तिक पक्ष लेलनि जे अपन बेटीक विवाह हालेमे विलायतसँ घूरल युवकक संग क' देने छल। लाभपुर किछु बेसिए संकीर्ण रहल हैत, कियेक तँ उनैसम शताब्दीमे पश्चिम बंगालक अनेक जिलासँ लोक उच्च अध्ययनक लेल इंगलैंड जा चुकल छल। बंगालक पुनर्जागरण वास्तवमे पश्चिम बंगालेक लोक सभक प्रयत्नसँ सम्भव भेल छल।	
	ताराशंकर कलकत्ता आबि गेलाह। हुनक कथा "श्मशान घाट" जे एकटा बच्चाक मृत्युक विषयमे छल, सँ सजनीकांत दास एतेक बेसी प्रभावित भेलाह जे ओ ओकरा "बंगश्री"क पहिल अंकमे छपलनि।	
	ताराशंकर अनुभव कैलनि जे घटनाक केन्द्रमे रहबाक लेल हुनका कलकत्तामे रहबाक चाही। प्रसिद्ध चित्रकार यामिनी राय सेहो हुनका यैह सलाह देलनि। कलकत्तामे रहबाक लेल मासिक बीस पच्चीस रुपैया आवश्यक छल। एतबा ओ कोना कमैताह? सवित्रीप्रसन्न चटर्जी बारह अंकमे प्रकाशित उपन्यासक लेल १० (दस) रुपैया हुनका देने छलाह। मुदा सभ सम्पादकसँ एतेक उदारताक आशा नहि कैल जा सकैछ। पुस्तकक दोसर संस्करण कदाचित होइत छल। लेखनसँ पैसा कमैबाक आशा कोनो लेखक नहि करैत छल। ओ लाभपुर घुरि गेलाह। बेचैनी आ दोड़धूपक एखटा आर क्रम चलल। "बंगश्री" आ "भारतवर्ष" मे हुनक दू टा उल्लेखनीय कथा छपल। एकटा गामक मेलापर छल आ दोसर एकटा दीन-हीन स्त्रीक विषयमे, जकरा गाममे चुड़ैल कहल जाइत छल।	
	अपन कथा सभक लेल सामग्री जुटबैत काल अकस्मात् हुनका एक मित्र पुलिस अफसर चेतैलकनि जे जिलाक पुलिस प्रधान शमशुद्दोहा हुनक विषय मे पूछताछ क' रहल अछि।	
	बीरभूमक लोक शमशुद्दोहा केँ सरलतासँ नहि बिसरि सकैत अछि। ओ जिलामे आतंकक राज शुरू क' देने छल। ताराशंकर कलकत्ता आबि गेलाह। शमशुद्दोहा कलकत्तामे हुनक जीविकाक स्रोतक विषयमे पूछताछ कैलक। सजनीकांत दास ताराशंकरक रक्षा कैलनि। ओ अपने खाता- बहीमे देखा देलनि जे ताराशंकर तीस रुपैया मास पर हुनका लेल काज करैत छथि।	
	वास्तवमे ताराशंकर कोनहु तीस रुपैया मास नहि पबैत छलाह। खाता-बहीमे शंका दूर करबाक लेल हेरा-फेरी कैल गेल छल। ताराशंकर अपन लेखनसँ उपार्जन करैत छलाह। ओ दक्षिण कलकत्तामे टीनक छत बाला एकटा कोठली भाड़ापर लेलनि। किराया पाँच रुपैया मास छल। एक रुपैया ओ बिजलीक लेल दैत छलाह। गरीब सभक एकटा होटलमे दू बेरक भोजनक आठ टाका मास लगैत छलनि। चाय आ नाश्तापर सातसँ आठ रुपैया और एतबे सबारीपर खर्च होइत छल। सफाई धोआइ ताराशंकर स्वयं करैत छलाह। ओ धरतीपर सुतैत छलाह आ टीनक बक्साकेँ लिखबाक डेस्कक रूपमे व्यवहार करैत छलाह।	
	एहि तरहेँ ओ व्यावसायिक लेखकक जीवन आरम्भ कैलनि।	

</body></text>

</Doc>